



Technical Education & Social Welfare Society

(Run Under CG Society Act.Reg.No.122201950672)

Introduction Of Computer

Head Office: VIP Road Fundhar Raipur CG

Introduction of Computer in Hindi (कंप्यूटर क्या है)

वर्तमान समय इन्टरनेट का युग है जिसमें कंप्यूटर का ज्ञान होना अति आवश्यक है आज सभी कार्य कंप्यूटर के द्वारा किये जा रहे हैं चाहे ऑनलाइन क्लास हो? ऑनलाइन मार्केटिंग या ऑनलाइन मनी ट्रांसफर कुछ भी आज सभी चीजें कंप्यूटर के माध्यम से की जा रही हैं, तो इसी कड़ी में हम आज की इस पोस्ट में जानेंगे कि कंप्यूटर क्या है? कंप्यूटर का पूरा नाम? कंप्यूटर को हिंदी में क्या कहते हैं? आदि बहुत सारे सवालों का जवाब हम आज की इस पोस्ट में जानेंगे?

कम्प्यूटर शब्द की उत्पत्ति कहाँ से हुई?

कम्प्यूटर शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के कम्प्यूट शब्द से हुई जिसका अर्थ है कैलकुलेशन तो हम कह सकते हैं कि कम्प्यूटर गणना करने वाली एक मशीन है इसलिए **कंप्यूटर को हिन्दी में संगणक कहा जाता है।**

कम्प्यूटर बना है?

कम्प्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर से मिलकर बना है।

Full Form of Computer (कंप्यूटर का पूरा नाम)

C - Common

O – Operating

M - Machine

P- Particularly

U- Used for

T - Technical

E - Educational

R - Research

Generation of Computer (कंप्यूटर की पीढ़िया)

पहली पीढ़ी

1. 1940 से 1956 की अवधि, को कंप्यूटर की पहली पीढ़ी के रूप में माना जाता है।
2. पहली पीढ़ी के कंप्यूटरों में वैक्यूम ट्यूब का उपयोग करके विकसित किया गया था।
3. पहली पीढ़ी के कंप्यूटर बाइनरी-कोडेड कॉन्सेप्ट (0-1 की भाषा) पर काम करते थे। उदाहरण: ENIAC, EDVAC, आदि।

दूसरी पीढ़ी

1. 1956 से 1963 की अवधि को कंप्यूटर की दूसरी पीढ़ी के रूप में माना जाता है।
2. दूसरी पीढ़ी के कंप्यूटरों को ट्रांजिस्टर तकनीक का उपयोग करके विकसित किया गया था।
3. पहली पीढ़ी की तुलना में दूसरी पीढ़ी के कंप्यूटर का आकार छोटा था।

तीसरी पीढ़ी

1. 1963 से 1971 की अवधि को कंप्यूटर की तीसरी पीढ़ी के रूप में माना जाता है।
2. तीसरी पीढ़ी के कंप्यूटर को इंटीग्रेटेड सर्किट (IC) तकनीक का उपयोग करके विकसित किया गया था।
3. दूसरी पीढ़ी के कंप्यूटरों की तुलना में तीसरी पीढ़ी के कंप्यूटरों का आकार छोटा था।
4. तीसरी पीढ़ी के कंप्यूटर ने कम बिजली की खपत की और कम गर्मी भी पैदा की।
5. तीसरी पीढ़ी के कंप्यूटरों की रखरखाव लागत भी कम थी।
6. तीसरी पीढ़ी के कंप्यूटरों का कंप्यूटर सिस्टम व्यावसायिक उपयोग के लिए आसान था।

चौथी पीढ़ी

1. 1972 से 2010 की अवधि को कंप्यूटर की चौथी पीढ़ी के रूप में माना जाता है।
2. चौथी पीढ़ी के कंप्यूटरों को माइक्रोप्रोसेसर तकनीक का उपयोग करके विकसित किया गया था।
3. चौथी पीढ़ी में आने से कंप्यूटर आकार में बहुत छोटा हो गया ।
4. यह आम लोगों के लिए भी उपलब्ध हो गया।

पांचवी पीढ़ी

1. 2010 से अब तक की अवधि और उससे आगे, मोटे तौर पर पांचवीं पीढ़ी के कंप्यूटरों की अवधि के रूप में माना जाता है।
2. उस समय तक कंप्यूटर पीढ़ी को केवल हार्डवेयर के आधार पर वर्गीकृत किया जा रहा था, लेकिन पांचवीं पीढ़ी की तकनीक में सॉफ्टवेयर भी शामिल था।
3. पांचवीं पीढ़ी के कंप्यूटरों में उच्च क्षमता और बड़ी मेमोरी क्षमता थी।
4. इस पीढ़ी के कंप्यूटरों के साथ काम करना तेज था और एक साथ कई काम किए जा सकते थे।
5. पांचवीं पीढ़ी की कुछ लोकप्रिय उन्नत तकनीकों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, क्वांटम कंप्यूटेशन, नैनो टेक्नोलॉजी, पैरेलल प्रोसेसिंग आदि शामिल हैं।

Types of Computer (कंप्यूटर के प्रकार)

डेटा हैंडलिंग क्षमताओं के आधार पर , कंप्यूटर तीन प्रकार के होते हैं:

1. एनालॉग कंप्यूटर
2. डिजिटल कम्प्यूटर और
3. हाइब्रिड कंप्यूटर

1) एनालॉग कंप्यूटर

एनालॉग कंप्यूटर को एनालॉग डेटा को प्रोसेस करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। एनालॉग डेटा निरंतर डेटा है जो लगातार बदलता रहता है। हम

कह सकते हैं कि एनालॉग कंप्यूटर का उपयोग वहा किया जाता है जहां हमें हमेशा गति, तापमान, दबाव और करंट जैसे सटीक मानों की आवश्यकता नहीं होती है।

2) डिजिटल कंप्यूटर

डिजिटल कंप्यूटर को उच्च गति पर गणना और तार्किक संचालन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह डेटा को अंकों या बाइनरी नंबर (0 और 1) के रूप में इनपुट के रूप में स्वीकार करता है और आउटपुट का उत्पादन करने के लिए इसकी मेमोरी में संग्रहीत कार्यक्रमों के साथ इसे संसाधित करता है। सभी आधुनिक कंप्यूटर जैसे लैपटॉप, डेस्कटॉप स्मार्टफोन सहित जिनका हम घर या कार्यालय में उपयोग करते हैं, वे डिजिटल कंप्यूटर हैं।

3) हाइब्रिड कंप्यूटर

हाइब्रिड कंप्यूटर में एनालॉग और डिजिटल कंप्यूटर दोनों की विशेषताएं होती हैं। यह एक एनालॉग कंप्यूटर की तरह तेज़ है और इसमें डिजिटल कंप्यूटर की तरह मेमोरी और सटीकता है। यह एनालॉग संकेतों को स्वीकार करता है और प्रसंस्करण से पहले उन्हें डिजिटल रूप में परिवर्तित करता है। इसलिए, इसका व्यापक रूप से विशेष अनुप्रयोगों में उपयोग किया जाता है जहां एनालॉग और डिजिटल डेटा दोनों को संसाधित किया जाता है। उदाहरण के लिए, पेट्रोल पंपों में एक प्रोसेसर का उपयोग किया जाता है जो ईंधन प्रवाह के माप को मात्रा और कीमत में परिवर्तित करता है। इसी तरह, उनका उपयोग हवाई जहाज, अस्पतालों और वैज्ञानिक अनुप्रयोगों में किया जाता है।

आकार के आधार पर कंप्यूटर पांच प्रकार होते हैं:

1) सुपर कंप्यूटर

सुपर कंप्यूटर सबसे बड़े और सबसे तेज कंप्यूटर हैं। वे बड़ी मात्रा में डेटा को संसाधित करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। एक सुपर कंप्यूटर एक सेकंड में खरबों निर्देशों को संसाधित कर सकता है। इसमें हजारों इंटरकनेक्टेड प्रोसेसर हैं।

सुपर कंप्यूटर विशेष रूप से वैज्ञानिक और इंजीनियरिंग अनुप्रयोगों जैसे मौसम पूर्वानुमान, वैज्ञानिक सिमुलेशन और परमाणु ऊर्जा अनुसंधान में उपयोग किए जाते हैं। पहला सुपर कंप्यूटर 1976 में रोजर क्रे द्वारा विकसित किया गया था।

2) मेनफ्रेम कंप्यूटर

मेनफ्रेम कंप्यूटर एक साथ सैकड़ों या हजारों उपयोगकर्ताओं का समर्थन करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। वे एक ही समय में कई कार्यक्रमों का समर्थन कर सकते हैं। इसका मतलब है कि वे विभिन्न प्रक्रियाओं को एक साथ निष्पादित कर सकते हैं। मेनफ्रेम कंप्यूटर की ये विशेषताएं उन्हें बैंकिंग और दूरसंचार क्षेत्रों जैसे बड़े संगठनों के लिए आदर्श बनाती हैं, जिन्हें उच्च मात्रा में डेटा का प्रबंधन और प्रसंस्करण करने की आवश्यकता होती है।

3) मिनीफ्रेम या मिनीकंप्यूटर

यह एक मध्यम आकार का मल्टीप्रोसेसिंग कंप्यूटर है। इसमें दो या दो से अधिक प्रोसेसर होते हैं और एक बार में 4 से 200 उपयोगकर्ताओं का समर्थन

कर सकते हैं। मिनीफ्रेम कंप्यूटर का उपयोग संस्थानों और विभागों में बिलिंग, अकाउंटिंग और इन्वेंट्री प्रबंधन जैसे कार्यों के लिए किया जाता है। एक मिनी कंप्यूटर मेनफ्रेम और माइक्रो कंप्यूटर के बीच स्थित होता है क्योंकि यह मेनफ्रेम से छोटा होता है लेकिन माइक्रो कंप्यूटर से बड़ा होता है।

4) वर्कस्टेशन

वर्कस्टेशन एक एकल उपयोगकर्ता कंप्यूटर है जिसे तकनीकी या वैज्ञानिक अनुप्रयोगों के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसमें तेज माइक्रोप्रोसेसर, बड़ी मात्रा में रैम और हाई स्पीड ग्राफिक एडेप्टर हैं। यह आम तौर पर महान विशेषज्ञता के साथ एक विशिष्ट कार्य करता है; तदनुसार, वे विभिन्न प्रकार के होते हैं जैसे कि ग्राफिक्स वर्कस्टेशन, म्यूजिक वर्कस्टेशन और इंजीनियरिंग डिजाइन वर्कस्टेशन।

5) माइक्रो कंप्यूटर

माइक्रो कंप्यूटर को पर्सनल कंप्यूटर के रूप में भी जाना जाता है। यह एक सामान्य-उद्देश्य वाला कंप्यूटर है जिसे व्यक्तिगत उपयोग के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसमें सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट, मेमोरी, स्टोरेज एरिया, इनपुट यूनिट और आउटपुट यूनिट के रूप में एक माइक्रोप्रोसेसर है। लैपटॉप और डेस्कटॉप कंप्यूटर माइक्रो कंप्यूटर के उदाहरण हैं। वे व्यक्तिगत काम के लिए उपयुक्त हैं जो एक असाइनमेंट कर सकते हैं, एक फिल्म देख सकते हैं या कार्यालय के काम के लिए कार्यालय में हो सकते हैं।

Components of Computer (कंप्यूटर के घटक)

कंप्यूटर में तीन मुख्य घटक होते हैं:-

1. इनपुट और आउटपुट यूनिट
2. सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (सीपीयू)
3. मेमोरी यूनिट

1. इनपुट और आउटपुट यूनिट

उपयोगकर्ता के लिए कंप्यूटर के साथ संवाद करने के लिए इनपुट और आउटपुट डिवाइस की आवश्यकता होती है। इनपुट डिवाइस के माध्यम से हम कंप्यूटर सिस्टम में डेटा इंsert करते हैं और आउटपुट डिवाइस के माध्यम से हम इनपुट डाटा का रिजल्ट प्राप्त करते हैं।

2. सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (सीपीयू)

सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (CPU) एक कंप्यूटर सिस्टम का हिस्सा है जो सिस्टम के बुनियादी अंकगणितीय, तार्किक और इनपुट /आउटपुट संचालन करने के लिए कंप्यूटर प्रोग्राम के निर्देश को पूरा करता है।

CPU को कंप्यूटर के मस्तिष्क के रूप में भी जाना जाता है। CPU की गति का उपयोग माइक्रो प्रोसेसर के प्रकार पर निर्भर करता है और इसे मेगा हर्ट्ज (मेगाहर्ट्ज) में मापा जाता है

CPU तीन भागों में विभाजित है :-

1) अर्थमैटिक लॉजिक यूनिट (ALU)

Computer में एक अर्थमैटिक लॉजिक यूनिट (ALU) एक डिजिटल सर्किट है

जो अंकगणित और तार्किक संचालन करता है।

2) नियंत्रण इकाई (CU)

कंट्रोल यूनिट एक कंप्यूटर सिस्टम के इनपुट और आउटपुट डिवाइस को समन्वयित करता है। अर्थात इस यूनिट के द्वारा हम कम्प्यूटर से जुड़े हुए कंपोनन्ट के कार्य को नियंत्रित करते हैं।

3) मेमोरी यूनिट (MU)

यह Memory अस्थायी या स्थायी आधार पर कार्यक्रमों या डेटा को संग्रहीत करने के लिए जिम्मेदार है। इसमें प्राथमिक मेमोरी (Primary Memory) और सेकेंडरी मेमोरी (Secondary Memory) है। जिस इनपुट डेटा को प्रोसेस करना है उसे प्रोसेसिंग से पहले मुख्य मेमोरी में लाया जाता है।

Input and Output Device (इनपुट और आउटपुट यूनिट)

1. INPUT DEVICE

एक इनपुट डिवाइस हार्डवेयर डिवाइस है जो कंप्यूटर सिस्टम में डेटा भेजता है। इन उपकरणों का उपयोग इनपुट डेटा के लिए किया जाता है और विभिन्न प्रकार के इनपुट उपकरणों से सीपीयू द्वारा निर्देशों को स्वीकार किया जाता है। उदाहरण -

KEYBOARD, MOUSE, JOYSTICKS, LIGHT PEN, GRAPHICS TABLET, TOUCH SCREEN, TOUCH PAD, TRACKBALL, SCANNER MICR(Magnetic Ink Character Recognition), OCR (Optical Character Recognition), OMR (Optical Mark reader) Bar code Reader, Microphone, Digital Camera, Biometric Sensor

2. OUTPUT DEVICE

एक आउटपुट डिवाइस कंप्यूटर हार्डवेयर उपकरणों का एक हिस्सा है, जिसका उपयोग डेटा प्रोसेसिंग के परिणाम को संप्रेषित करने के लिए किया जाता है आउटपुट डिवाइस उपयोगकर्ता द्वारा किए गए विभिन्न ऑपरेशनों का परिणाम है। कुछ उपकरण, जिनका उपयोग संसाधित परिणाम या आउटपुट को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है उदाहरण-

Monitor, Printer, Plotter, Speaker, Headphone, Projector etc.

COMPUTER MEMORY (कंप्यूटर मेमोरी)

कंप्यूटर मेमोरी कंप्यूटर सिस्टम में सबसे महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है। यह आंतरिक या बाहरी भंडारण क्षेत्र है, जो बाइनरी नंबर के रूप में प्रसंस्करण के दौरान डेटा और निर्देश को रखता है।

कंप्यूटर मेमोरी को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है -

1. प्राथमिक मेमोरी (Main Memory) और
2. माध्यमिक मेमोरी (Secondary Memory)

1. प्राथमिक मेमोरी (Main Memory)

इसे मुख्य मेमोरी के रूप में भी जाना जाता है। यह डेटा और निर्देशों को रखने के लिए कंप्यूटर द्वारा उपयोग की जाने वाली आंतरिक भंडारण मेमोरी है। प्राथमिक मेमोरी में भंडारण क्षमता सीमित होती है।

प्राथमिक मेमोरी प्रकृति में अस्थिर है यानी इसे वर्तमान जानकारी को गति देने के लिए निरंतर बिजली की आपूर्ति की आवश्यकता होती है।

प्राथमिक मेमोरी दो प्रकार की होती है

1. रैम (RAM)

2. रोम (ROM)

1. रैंडम एक्सेस मेमोरी (RAM) - यह आंतरिक मेमोरी है जिसे पढ़ने के साथ-साथ लिखा भी जा सकता है। यह मेमोरी अस्थिर मेमोरी (Volatile Memory) है इसके लिए विद्युत प्रवाह के निरंतर प्रवाह की आवश्यकता होती है।

2. रीड ओनली मेमोरी (ROM) - इस मेमोरी में जो भी डाटा एक बार संग्रहित हो जाता है, उसे बदला नहीं जा सकता है। इसलिए Data को केवल पढ़ा और इस्तेमाल किया जा सकता है। इस मेमोरी को नॉन-वोलेटाइल मेमोरी कहा जाता है।

कैश मेमोरी (Cache Memory)

कैश (Cache Memory) मेमोरी बेहद तेज मेमोरी है जिसे कंप्यूटर की सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट में बनाया गया है या इसके बगल में एक अलग चिप लगी है। सीपीयू कैश मेमोरी का उपयोग उन निर्देशों को संग्रहित करने के लिए करता है जो प्रोग्राम को चलाने के लिए बार-बार आवश्यक होते हैं।

2. स्टोरेज डिवाइस / सेकेंडरी मेमोरी (secondary Memory)

सेकेंडरी मेमोरी को सेकेंडरी स्टोरेज मेमोरी के रूप में भी जाना जाता है। यह प्राइमरी मेमोरी से धीमी और सस्ती है। यह एक स्थायी भंडारण उपकरण है।

उदाहरण

1. फ्लॉपी डिस्क
2. हार्ड डिस्क

3. कॉम्पैक्ट डिस्क (सीडी)
4. डिजिटल वीडियो डिस्क (डीवीडी)
5. पेन ड्राइव (पी.डी.)
6. मेमोरी कार्ड आदि।

हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर में अन्तर (Concept of Hardware & Software)

एक कंप्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर का एक संयोजन है। ये दोनों संयुक्त रूप से काम करते हैं और कंप्यूटर को इसके लिए निर्देश देते हैं।

हार्डवेयर (Hardware) -

कंप्यूटर के वे पार्ट्स जिन्हें हम छू सकते हैं हार्डवेयर कहलाते हैं जैसे कीबोर्ड, माउस, मॉनिटर और प्रिंटर आदि

सॉफ्टवेयर (Software)

सॉफ्टवेयर (Software) कंप्यूटर प्रोग्राम, प्रक्रिया और संबंधित डेटा का एक संग्रह है जो कंप्यूटर को यह बताने के लिए निर्देश प्रदान करता है कि यह क्या और कैसे करता है। एक सॉफ्टवेयर उपयोगकर्ता और कंप्यूटर के बीच एक इंटरफेस है। यह निर्देशों और कार्यक्रमों का एक समूह है जो हार्डवेयर को कमांड देने के लिए उपयोग किया जाता है।

सॉफ्टवेयर को दो प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है -

1. सिस्टम सॉफ्टवेयर (System Software)
2. एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर (Application Software)

1. सिस्टम सॉफ्टवेयर (System Software)

यह उपयोगकर्ता और कंप्यूटर के घटक के बीच इंटरफेस भी प्रदान करता है। सिस्टम सॉफ्टवेयर के कुछ सामान्य उदाहरण सभी ऑपरेटिंग सिस्टम हैं जैसे WINDOW, LINEX, UNIX, ANDROID आदि।

2. एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर (Application Software)

एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर एक कंप्यूटर सॉफ्टवेयर है जिसे उपयोगकर्ता को कार्य करने में मदद करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह विशिष्ट उपयोगों या अनुप्रयोगों के लिए डिजाइन किए गए निर्देशों या कार्यक्रमों का एक समूह है, जो उपयोगकर्ता को कंप्यूटर के साथ बातचीत करने में सक्षम बनाता है। एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर को अंतिम उपयोगकर्ता प्रोग्राम भी कहा जाता है जैसे - एम.एस.वर्ड, एक्सेल, पावर प्वाइंट, टैली, गेम्स और वे सभी सॉफ्टवेयर जिन पर हम काम करते हैं | Application Software कहलाते हैं।

संख्या प्रणाली (NUMBER SYSTEMS)

कंप्यूटर आपकी भाषा को नहीं समझ पाता है कि आप इनपुट के रूप में क्या देते हैं। इनपुट को एक रूप में परिवर्तित किया जाता है ताकि कंप्यूटर इसे समझने में सक्षम हो। एक कंप्यूटर केवल स्थितीय संख्या प्रणाली को समझ सकता है।

निम्नलिखित कम्प्यूटर संख्या (NUMBER SYSTEMS) प्रणाली यहाँ दी गई है

1. बाइनरी नंबर सिस्टम (BINARY NUMBER SYSTEMS)

बाइनरी नंबर सिस्टम में केवल दो अंक होते हैं 0 और 1. सभी डेटा 0 और 1 के रूप में परिवर्तित होते हैं और बाइनरी नम्बर सिस्टम पर डिजिटल कंप्यूटर काम करते हैं। बाइनरी नंबर सिस्टम का बेस 2 है।

2. दशमलव संख्या प्रणाली (DECIMAL NUMBER SYSTEMS)

दशमलव संख्या प्रणाली में एक संख्या का प्रतिनिधित्व करने के लिए 8 प्रतीक हैं। इसलिए इस संख्या प्रणाली का आधार 10 है और अंकों का उपयोग 0 से 9 तक किया जाता है।

2. एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर (Application Software)

एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर एक कंप्यूटर सॉफ्टवेयर है जिसे उपयोगकर्ता को कार्य करने में मदद करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह विशिष्ट उपयोगों या अनुप्रयोगों के लिए डिजाइन किए गए निर्देशों या कार्यक्रमों का एक समूह है, जो उपयोगकर्ता को कंप्यूटर के साथ बातचीत करने में सक्षम बनाता है। एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर को अंतिम उपयोगकर्ता प्रोग्राम भी कहा जाता है जैसे - एम.एस.वर्ड, एक्सेल, पावर प्वाइंट, टैली, गेम्स और वे सभी सॉफ्टवेयर जिन पर हम काम करते हैं | Application Software कहलाते हैं।

संख्या प्रणाली (NUMBER SYSTEMS)

कंप्यूटर आपकी भाषा को नहीं समझ पाता है कि आप इनपुट के रूप में क्या देते हैं। इनपुट को एक रूप में परिवर्तित किया जाता है ताकि कंप्यूटर इसे समझने में सक्षम हो। एक कंप्यूटर केवल स्थितीय संख्या प्रणाली को समझ सकता है।

निम्नलिखित कम्प्यूटर संख्या (NUMBER SYSTEMS) प्रणाली यहाँ दी गई है

1. बाइनरी नंबर सिस्टम (BINARY NUMBER SYSTEMS)

बाइनरी नंबर सिस्टम में केवल दो अंक होते हैं 0 और 1. सभी डेटा 0 और 1 के रूप में परिवर्तित होते हैं और बाइनरी नम्बर सिस्टम पर डिजिटल कंप्यूटर काम करते हैं। बाइनरी नंबर सिस्टम का बेस 2 है।

2. दशमलव संख्या प्रणाली (DECIMAL NUMBER SYSTEMS)

दशमलव संख्या प्रणाली में एक संख्या का प्रतिनिधित्व करने के लिए 8 प्रतीक हैं। इसलिए इस संख्या प्रणाली का आधार 10 है और अंकों का उपयोग 0 से 9 तक किया जाता है।

3. ऑक्टल नंबर सिस्टम (OCTAL NUMBER SYSTEMS)

इस संख्या प्रणाली में एक संख्या का प्रतिनिधित्व करने के लिए 8 प्रतीक हैं। इसका बेस (आधार) 8 है और इसमें अंक 0 से 7 तक उपयोग किए जाते हैं।

4. हेक्साडेसिमल नंबर सिस्टम (HEXADECIMAL NUMBER SYSTEMS)

इस संख्या प्रणाली में 16 अंक उपलब्ध हैं। ये 0 से 9 और A से F हैं, जहां A 10 को दर्शाता है, B 11 को दर्शाता है, C 12 को दर्शाता है, D 13, E 14 और F 15 को दर्शाता है इस संख्या प्रणाली में 16 अंक हैं इसलिए इसका बेस (आधार) 16 होता है।

Unit of Computer Memory measurement

Bit	-	The smallest unit of data. is is either 0 or 1
Nible	-	A group of 4 bits
Byte	-	A group of 8 bits
Kilobyte (KB)-	1Kb = 1024 bytes	
Megabyte (MB)-	1Mb = 1024 Kb	
Gigabyte (GB)-	1 GB = 1024MB	
Terabyte (TB)-	1TB = 1024GB	

अंत में

आशा है की पूरी पोस्ट पढ़ने के बाद आपको कंप्यूटर का बेसिक ज्ञान हो गया होगा.